اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج۱ ص۴۰ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया) । (تاريخ دمشق لابن عساكر ج۵۱ ص۱۳۸ دار الفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल"**

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त़ में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ़-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) ह़ुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह़ करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस ह़ुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **"ह़ुरूफ़ की पहचान"** नामी चार्ट मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन ह़र्फ़ के नीचे खोड़ा (्) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت، استعمال (दा'वत, इस्ति'माल) वग़ैरा।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लत़ी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ھ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ی	इ = اِ	ऐ = اے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

मिस्वाक शरीफ़ के फ़ज़ाइल

(मअ़ 10 ह़िकायात व रिवायात)

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए मगर येह रिसाला (21 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप मिस्वाक के शैदाई हो जाएंगे ।

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में **50** बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से हाथ मिलाऊंगा ।

(ابن بشکوال ص۹۰ حدیث۹۰)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कब मिस्वाक का सवाब नहीं मिलेगा !

आ'माल का दारो मदार निय्यतों पर है **:** अच्छी निय्यत न हो तो सवाब नहीं मिलता । लिहाज़ा **मिस्वाक** करते वक़्त येह निय्यत कर लीजिये **:** ''सुन्नत का सवाब कमाने के लिये **मिस्वाक** करूंगा और इस के ज़रीए ज़िक्रो दुरूद व तिलावते कुरआन के लिये मुंह की सफ़ाई करूंगा ।''

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें भेजता है। (مسلم)

"मिस्वाक सुन्नत है" के दस हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के मु-तअ़ल्लिक़ 10 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

﴾1﴿ **मिस्वाक** कर के **दो**[2] रक्अ़तें पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** की 70 रक्अ़तों से अफ़्ज़ल है[1] ﴾2﴿ **मिस्वाक** के साथ नमाज़ पढ़ना बिग़ैर **मिस्वाक** के नमाज़ पढ़ने से 70 गुना अफ़्ज़ल है[2] ﴾3﴿ चार चीज़ें रसूलों की सुन्नत हैं : (1) इ़त्र लगाना (2) निकाह़ करना (3) **मिस्वाक** करना और (4) ह़या करना[3] ﴾4﴿ **मिस्वाक** करो ! **मिस्वाक** करो ! मेरे पास **पीले दांत** ले कर न आया करो[4] ﴾5﴿ **मिस्वाक** में मौत के सिवा हर मरज़ से शिफ़ा है[5] ﴾6﴿ अगर मुझे अपनी उम्मत की मशक़्क़त व दुश्वारी का ख़याल न होता तो मैं इन को हर वुज़ू के साथ **मिस्वाक** करने का हुक्म देता[6] ﴾7﴿ **मिस्वाक** का इस्ति'माल अपने लिये लाज़िम कर लो क्यूं कि इस में मुंह की सफ़ाई है और येह रब तआ़ला की रिज़ा का सबब है[7] ﴾8﴿ वुज़ू निस्फ़ (या'नी आधा) ईमान है, और **मिस्वाक** करना निस्फ़ (या'नी आधा) वुज़ू है[8] ﴾9﴿ बन्दा जब **मिस्वाक** कर लेता है फिर नमाज़ को खड़ा होता है तो फ़िरिश्ता उस के पीछे खड़ा हो कर क़िराअत सुनता है, फिर उस से क़रीब होता है यहां तक कि अपना मुंह उस के मुंह पर रख देता है[9] ﴾10﴿ "जिस शख़्स ने जुमुए के दिन ग़ुस्ल किया और **मिस्वाक** की, ख़ुश्बू लगाई, उ़म्दा कपड़े पहने, फिर मस्जिद में आया

مدینہ

۱: اَلتَّرغِیب وَالتَّرهِیب ج۱ص۱۰۲حدیث۱۸ ۲: شعب الایمان ج۳ص۲۶حدیث۲۷۷٤ ۳: مُسندِ احمد بن حنبل ج۹ص۱٤۷حدیث۲۳٦٤۱ ٤: جَمْعُ الْجَوامِع ج۱ص۳۸۹حدیث۲۸۷۵ ۵: جامعِ صغیر ص۲۹۷حدیث۴۸٤۰ ٦: بُخاری ج۱ص٦۳۷ ۷: مُسندِ احمد بن حنبل ج۲ص٤۳۸حدیث۵۸٦۹ ۸: مُصَنَّف ابنِ اَبی شیبه ج۱ص۱۹۷حدیث۲۲ ۹: البحر الزخار ج۲ص۲۱٤حدیث:٦۰۳

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख़्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े। (ترمذی)

और लोगों की गरदनों को नहीं फलांगा, बल्कि नमाज़ पढ़ी और इमाम के आने के बा'द (या'नी खुत्बे में और) नमाज़ से फ़ारिग़ होने तक ख़ामोश रहा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के तमाम गुनाहों को जो उस पूरे हफ़्ते में हुए थे, मुआफ़ फ़रमा देता है।" **(مُسندِ احمد بن حنبل ج٤ ص١٦٢ حديث١١٧٦٨)**

मिस्वाक करने से ह़ाफ़िज़ा तेज़ होता है

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं : तीन चीज़ें ह़ाफ़िज़ा तेज़ करतीं और बल्ग़म दूर करती हैं : (1) **मिस्वाक** (2) रोज़ा और (3) क़ुरआने करीम की तिलावत। **(اِحیاءُ العلوم ج١ ص٣٦٤)**

मरते वक़्त कलिमा नसीब होगा

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 288 पर है : मशाइख़े किराम (رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام) फ़रमाते हैं : "**जो शख़्स मिस्वाक का आ़दी हो मरते वक़्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा** और जो **अफ़्यून** खाता हो, मरते वक़्त उसे कलिमा नसीब न होगा।"

अ़क़्ल बढ़ाने वाले आ'माल

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : चार चीज़ें अ़क़्ल बढ़ाती हैं : ﴾1﴿ फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ ﴾2﴿ **मिस्वाक** का इस्ति'माल ﴾3﴿ सु-लह़ा या'नी नेक लोगों की सोह़बत और ﴾4﴿ अपने इ़ल्म पर अ़मल करना। **(حَیاۃُ الحَیَوان لِلدَّمِیری ج٢ ص١٦٦)**

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कब कब मिस्वाक फ़रमाते !

हर नमाज़ के लिये मिस्वाक

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जु-हनी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने घर से किसी भी नमाज़ के लिये उस वक़्त तक बाहर तशरीफ़ न लाते, जब तक **मिस्वाक** न फ़रमा लेते। (اَلْمُعْجَمُ الْکَبِیر لِلطّبَرانی ج۵ص۲۵۴حدیث۵۲۶۱)

सोने से उठ कर मिस्वाक करना सुन्नत है

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरवरे काएनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास रात को वुज़ू का पानी और **मिस्वाक** रखी जाती थी, जब आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم रात में उठते तो पहले क़ज़ाए ह़ाजत करते फिर **मिस्वाक** फ़रमाते। (ابوداؤد ج۲حدیث۵۶) **ह़ज़रते** सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم जब कभी रात या दिन में सो कर बेदार होते तो वुज़ू से पहले **मिस्वाक** फ़रमाते थे।

(ایضاً حدیث۵۷)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! सो कर उठने के बा'द **मिस्वाक** करना सुन्नत है, सोने की ह़ालत में हमारे पेट से गन्दी हवाएं मुंह की त़रफ़ चढ़ जाती हैं, जिस की वज्ह से मुंह में बदबू और ज़ाएक़े में तब्दीली हो जाती है। इस सुन्नत की ब-र-कत से मुंह साफ़ हो जाता है।

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن سنی)

घर में दाख़िल हो कर सब से पहला काम

ह़ज़रते शुरैह़ बिन हानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से पूछा : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब घर में दाख़िल होते तो सब से पहले क्या काम करते थे ? फ़रमाया : **मिस्वाक ।** (مُسلم ص۱۵۲حدیث۲۵۳)

रोज़े में मिस्वाक

ह़ज़रते सय्यिदुना आ़मिर बिन रबीआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है : ''रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को मैं ने बे शुमार बार **रोज़े** में **मिस्वाक** करते देखा ।'' (تِرمِذی ج ۲ ص ۱۷۶حدیث۷۲۵)

रोज़े में मिस्वाक के बा'ज़ म-दनी फूल

बहारे शरीअ़त जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 997 पर है : **रोज़े** में **मिस्वाक** करना मक्रूह नहीं बल्कि जैसे और दिनों में सुन्नत है वैसे ही **रोज़े** में भी सुन्नत है, **मिस्वाक** ख़ुश्क हो या तर, अगर्चे पानी से तर की हो, ज़वाल से पहले करें या बा'द, किसी वक़्त भी मक्रूह नहीं । अक्सर लोगों में मश्हूर है कि दो पहर के बा'द रोज़ादार के लिये **मिस्वाक** करना मक्रूह है येह हमारे मज़्हबे ह़-नफ़िय्या के ख़िलाफ़ है । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 997) अगर **मिस्वाक** चबाने से रेशे छूटें या मज़ा मह़सूस हो तो ऐसी **मिस्वाक** रोज़े में नहीं करना चाहिये ।

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 10, स. 511)

विसाले ज़ाहिरी से पहले मिस्वाक

ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं

कि ब वक़्ते विसाले ज़ाहिरी (या'नी ज़ाहिरी वफ़ात) मैं ने दरयाफ़्त किया कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये **मिस्वाक** लूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे अक़्दस के इशारे से फ़रमाया : "हां ।" चुनान्चे मैं ने (अपने सगे भाई) ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान رَضِىَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से **मिस्वाक** ले कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेश की । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस्ति'माल करना चाही लेकिन **मिस्वाक** सख़्त थी, इस लिये मैं ने अ़र्ज़ की : नर्म कर दूं ? आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरे मुबारक के इशारे से फ़रमाया : "हां ।" चुनान्चे मैं ने दांतों से चबा कर नर्म कर के सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को पेश कर दी । आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस को दांतों पर फैरना शुरूअ़ किया ।

(بخاری ج۱، ص۳۰۸، ۱۵۷ حدیث ۸۹۰، ۴۴۴۹ ملخّصاً)

मुसाफ़िर को 8 चीज़ें अपने साथ रखना सुन्नत है

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के वालिदे माजिद रईसुल मु-तकल्लिमीन ह़ज़रत मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان लिखते हैं : वोह जनाब (या'नी नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) सफ़र में ﴾1﴿ **मिस्वाक** और ﴾2﴿ सुरमादान और ﴾3﴿ आईना और ﴾4﴿ शाना (या'नी कंघा) और ﴾5﴿ क़ैंची और ﴾6﴿ सूई ﴾7﴿ धागा अपने साथ रखते । (अन्वारे जमाले मुस्तफ़ा, स. 160) एक दूसरी रिवायत में ﴾8﴿ "तेल" के अल्फ़ाज़ (भी) नक़्ल हुए हैं ।

(سُبُلُ الْهُدٰى ج۷ ص۳۴۷)

www.dawateislami.net

खाने से पहले मिस्वाक

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا खाना खाने से पहले **मिस्वाक** कर लिया करते थे। **(مُصَنَّف ابن اَبی شَیْبہ ج۱ ص۱۹۷)**

दांतों का पीलापन दूर करने का नुस्ख़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : "खाने के बा'द **मिस्वाक** करना दांतों का पीलापन दूर करता है।"

(الکامل فی ضعفاء الرجال ج٤ ص١٢٣)

80 फ़ीसद अमराज़ के अस्बाब

माहिरीन की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ "80 फ़ीसद अमराज़ मे'दे (या'नी पेट) और दांतों की ख़राबी से पैदा होते हैं।" उ़मूमन दांतों की सफ़ाई का ख़याल न रखने की वज्ह से मसूढ़ों में त़रह़ त़रह़ के जरासीम परवरिश पाते फिर मे'दे में जाते और त़रह़ त़रह़ के अमराज़ का सबब बनते हैं।

मिस्वाक के त़िब्बी फ़ाएदे

۞ अमरीका की एक मश्हूर कम्पनी की तह़क़ीक़ात के मुत़ाबिक़ **मिस्वाक** में नुक़्सान देने वाले बेक्टेरिया (Bacteria) को ख़त्म करने की सलाह़िय्यत किसी भी दूसरे त़रीक़े की निस्बत 20 फ़ीसद ज़ियादा है ۞ स्वीडन के साइन्स दानों की एक तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ **मिस्वाक** के रेशे बेक्टेरिया को छूए बिग़ैर बराहे रास्त (Direct) ख़त्म कर देते हैं और दांतों को कई बीमारियों से बचाते हैं ۞ यू.एस. नेशनल लायब्रेरी ऑफ़

मेडीसिन (U.S. National Library of Medicine) की शाएअ़ शुदा तह्क़ीक़ में येह बताया गया है कि अगर **मिस्वाक** को सहीह़ तौ़र पर इस्ति'माल किया जाए तो येह दांतों और मुंह की सफ़ाई नीज़ मसूढ़ों की सिह्ह़त का बेहतरीन ज़रीआ़ है ۞ एक तह्क़ीक़ के मुताबिक़ जो लोग **मिस्वाक** के आ़दी हैं उन के मसूढ़ों से ख़ून आने की शिकायात बहुत कम होती हैं ۞ एटलान्टा अमरीका में दांतों से मु-तअ़ल्लिक़ होने वाली एक निशस्त में बताया गया कि **मिस्वाक** में ऐसे माद्दे (Substances) होते हैं जो दांतों को कमज़ोरी से बचाते हैं और वोह तमाम दवाएं जो दांतों की सफ़ाई में इस्ति'माल होती हैं, उन सब से ज़ियादा फ़ाएदा मन्द **मिस्वाक** है ۞ **मिस्वाक** दांतों पर जमी हुई मैल की तह को ख़त्म करती है ۞ **मिस्वाक** दांतों को टूट फूट से बचाती है ۞ दाइमी नज़्ला व ज़ुकाम के ऐसे मरीज़ जिन का बल्ग़म न निकलता हो, जब वोह **मिस्वाक** करते हैं तो बल्ग़म निकलने लगता है और यूं मरीज़ का दिमाग़ हलका होना शुरूअ़ हो जाता है ۞ पेथोलोजिस्टिज़ (Pathologists) के तजरिबे और तह्क़ीक़ से येह बात साबित हुई है कि दाइमी नज़्ले के लिये **मिस्वाक** बेहतरीन इ़लाज है।

मिस्वाक से मे'दे की तेज़ाबियत और मुंह के छाले का इलाज

मुंह के बा'ज़ क़िस्म के छाले मे'दे की गरमी और तेज़ाबियत की वज्ह से होते हैं। इन में एक क़िस्म ऐसी भी है जिस के जरासीम फैलते हैं, इस के लिये **ताज़ा मिस्वाक** मुंह में मलें और इस का बनने वाला

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया। (طبرانی)

लुआ़ब (या'नी थूक) भी ख़ूब मलें। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ मरज़ दूर हो जाएगा। बा'ज़ लोग शिकायत करते हैं कि दांत पीले पड़ गए हैं या दांतों से सफ़ेदी का अस्तर उतर गया है। ऐसे लोगों के लिये **मिस्वाक** के नए रेशे मुफ़ीद हैं, नीज़ दांतों की ज़र्दी (या'नी पीलापन) ख़त्म करने के लिये भी फ़ाएदे मन्द हैं। **मिस्वाक** तअ़फ़्फ़ुन (या'नी बदबू) को दफ़्अ़ (या'नी दूर) और मुंह के जरासीम का ख़ातिमा करती है, जिस से इन्सान बे शुमार अमराज़ से बच सकता है।

मिस्वाक की दुआ़

बा'ज़ फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام फ़रमाते हैं : **मिस्वाक** के वक़्त येह दुआ़ पढ़े :

(1) اَللّٰهُمَّ بَيِّضْ بِهٖ اَسْنَانِيْ، وَشُدَّ بِهٖ لِثَاتِيْ، وَثَبِّتْ بِهٖ لَهَاتِيْ، وَبَارِكْ لِيْ فِيْهِ، يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ۔[1]

(2) اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ فَمِيْ، وَنَوِّرْ قَلْبِيْ، وَطَهِّرْ بَدَنِيْ، وَحَرِّمْ جَسَدِيْ عَلَى النَّارِ، وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ۔[2]

मदीना

1. तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इस के ज़रीए़ मेरे दांतों को सफ़ेद, मसूढ़ों को मज़बूत़ और ह़ल्क़ को त़ाक़त वर फ़रमा दे और मेरे लिये इस में ब-र-कत अ़त़ा फ़रमा, ऐ सब मेह्‌रबानों से बढ़ कर मेह्‌रबान। (شَرحُ الْمُهَذَّب لِلنَّوَوِی ج١ ص٢٨٣ مُلَخَّصاً)

2. तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मेरे मुंह को साफ़ सुथरा, दिल को रोशन, बदन को पाक और मेरे जिस्म को जहन्नम पर ह़राम फ़रमा दे और मुझे अपनी रह़मत से अपने नेक बन्दों में शामिल फ़रमा। (عُمدَةُ القاری ج٥ ص٣١ تَحتَ الحدیث٨٨٧)

www.dawateislami.net

म–दनी फूल : चाहें तो दोनों दुआ़एं पढ़िये या कोई एक दुआ़ पढ़ लीजिये।

"मिस्वाक करना सुन्नत है" के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से मिस्वाक के 14 म–दनी फूल

۞ **मिस्वाक** पीलू या ज़ैतून या नीम वग़ैरा कड़वी लकड़ी की हो ۞ **मिस्वाक** की मोटाई छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ۞ **मिस्वाक** एक बालिश्त से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ۞ इस के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूढ़ों के दरमियान ख़ला (GAP) का बाइ़स बनते हैं ۞ **मिस्वाक** ताज़ा हो तो ख़ूब (या'नी बेहतर) वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ۞ त़बीबों का मश्वरा है कि **मिस्वाक** के रेशे रोज़ाना काटते रहिये।

मिस्वाक करने का त़रीक़ा

۞ दांतों की चौड़ाई में **मिस्वाक** कीजिये ۞ जब भी **मिस्वाक** करनी हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये, हर बार धो लीजिये ۞ **मिस्वाक** सीधे हाथ में इस त़रह़ लीजिये कि छुंग्लिया या'नी छोटी उंगली उस के नीचे और बीच की तीन उंग्लियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो, पहले सीधी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उलटी त़रफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी त़रफ़ नीचे फिर उलटी त़रफ़ नीचे **मिस्वाक** कीजिये ۞ मुठ्ठी बांध कर **मिस्वाक** करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ۞ **मिस्वाक**

www.dawateislami.net

वुज़ू की सुन्नते क़ब्लिया है (या'नी मिस्वाक वुज़ू से पहले की सुन्नत है वुज़ू के अन्दर की सुन्नत नहीं लिहाज़ा वुज़ू शुरूअ़ करने से क़ब्ल मिस्वाक कीजिये फिर तीन तीन बार दोनों हाथ धोएं और त़रीक़े के मुत़ाबिक़ वुज़ू मुकम्मल कीजिये) अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो। (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 837)

औ़रतों के लिये मिस्वाक करना बीबी आ़इशा की सुन्नत है

"मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" में है : "औ़रतों के लिये **मिस्वाक** करना उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا की **सुन्नत** है लेकिन अगर वोह न करें तो ह़रज नहीं। इन के दांत और मसूढ़े ब निस्बत मर्दों के कमज़ोर होते हैं, (इन के लिये) मिस्सी या'नी दन्दासा काफ़ी है।" (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 357)

जब मिस्वाक ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए

मिस्वाक जब ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एह़तियात़ से रख दीजिये या दफ़्न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़्न बांध कर समुन्दर में डुबो दीजिये। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ **बहारे शरीअ़त** जिल्द अव्वल सफ़्ह़ा 294 ता 295 का मुत़ा-लआ़ फ़रमा लीजिये)

क्या आप को मिस्वाक करना आता है ?

हो सकता है आप के दिल में येह ख़याल आए कि मैं तो बरसों से

मिस्वाक इस्ति'माल करता हूं मगर मेरे तो दांत और पेट दोनों ही ख़राब हैं ! मेरे भोलेभाले इस्लामी भाई ! इस में **मिस्वाक** का नहीं आप का अपना क़ुसूर है। मैं (सगे मदीना عُفِیَ عَنۡہُ) इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि आज शायद हज़ारों में से कोई एकआध ही ऐसा हो जो सह़ीह़ उसूलों के मुत़ाबिक़ **मिस्वाक** इस्ति'माल करता हो, हम लोग अक्सर जल्दी जल्दी दांतों पर **मिस्वाक** मल कर वुज़ू कर के चल पड़ते हैं या'नी यूं कहिये कि हम **मिस्वाक** नहीं बल्कि "रस्मे **मिस्वाक**" अदा करते हैं !

"मिस्वाक सुन्नत है" के दस ह़ुरूफ़ की निस्बत से आ़शिक़ाने मिस्वाक की 10 ह़िकायात व रिवायात

﴾1﴿ झुकी हुई मिस्वाक

नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक मक़ाम से दो **मिस्वाकें** ह़ासिल कीं जिन में से एक कुछ झुकी हुई थी और दूसरी सीधी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सीधी **मिस्वाक** अपने साथी सह़ाबी को दे दी और ख़म या'नी झुकी हुई अपने लिये रख ली। सह़ाबी ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **! अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **सीधी मिस्वाक** के ज़ियादा ह़क़दार हैं। फ़रमाया : "**जब भी कोई शख़्स किसी की रफ़ाक़त** (या'नी साथ) **इख़्तियार करता है अगर्चे दिन की एक साअ़त** (या'नी घड़ी भर) **हो, तो क़ियामत के दिन उस रफ़ाक़त के बारे में सुवाल किया जाएगा।**"

(قوتُ القلوب ج۲ ص۳۸۷، اِحیاءُ العلوم ج۲ ص۲۱۸ مُلَخَّصاً)

﴾2﴿ मिस्वाक को चूसना कैसा ?

''**दुर्रे मुख़्तार**'' की इ़बारत : ''**मिस्वाक** चूसने से अन्धा पन पैदा होता है'' के तह़त ''**फ़तावा शामी**'' में है कि बिग़ैर चूसे लुआ़ब (या'नी थूक) निगलने के बारे में ह़कीम तिरमिज़ी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ القَوِى ने फ़रमाया : ''**मिस्वाक** करते वक़्त शुरूअ़ में बनने वाला लुआ़ब (या'नी थूक) निगल (या'नी पेट में उतार) लो क्यूं कि येह जुज़ाम व बरस (या'नी कोढ़ जो कि फ़सादे ख़ून का एक मरज़ है) और मौत के सिवा तमाम बीमारियों के लिये फ़ाएदा मन्द है।'' **(رَدُّالْمُحتار ج۱ص۲۰۱)**

﴾3﴿ इ़मामा शरीफ़ में मिस्वाक

''**फ़तावा शामी**'' में है कि बा'ज़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان इ़मामा शरीफ़ के पेच में भी **मिस्वाक** रखते थे। **(رَدُّالْمُحتار ج۱ص۲۰۱)**

﴾4﴿ कान पर मिस्वाक

ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद बिन ख़ालिद जु-हनी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه मस्जिद में नमाज़ के लिये तशरीफ़ लाते तो **मिस्वाक** आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه के कान पर इस त़रह़ रखी होती जैसे कातिब (या'नी लिखने वाले) के कान पर क़लम रखा होता है। **(تِرمذی ج۱ص۱۰۰حدیث۲۳)**

﴾5﴿ गरदन में मिस्वाक

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 518 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**इमामे के फ़ज़ाइल**'' सफ़ह़ा 402 पर है : **ह़ज़रते** सय्यिदुना अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी

www.dawateislami.net

قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی इर्शाद फ़रमाते हैं : हम से अ़ह्द लिया गया है कि हर वुज़ू करने और हर नमाज़ पढ़ने से क़ब्ल पाबन्दी के साथ **मिस्वाक** किया करेंगे अगर्चे हम में से अक्सर को (मिस्वाक गुम न हो जाए इस लिये) **अपनी गरदन में डोरी के साथ मिस्वाक बांधना पड़े** या इमामे के साथ बांधना पड़े जब कि इमामा फ़क़त़ सरबन्द पर हो और अगर टोपी हो तो हम उस पर मज़बूती के साथ इमामा बांधेंगे और **मिस्वाक** को बाएं (या'नी LEFT) कान की त़रफ़ इमामे में अटका लेंगे। (لواقح الانوار ج۱ ص۱۶)

फ़ितने का ख़ौफ़ हो तो मुस्तह़ब तर्क करना होगा

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين की **मिस्वाक** शरीफ़ से मह़ब्बत मरह़बा ! और इन की प्यारी प्यारी अदाएं सद करोड़ मरह़बा ! येह ज़ेह्न में रहे ! आज कल **मिस्वाक** कान पर रख कर या गरदन में लटका कर या इमामे शरीफ़ में रख कर अगर कोई घर से बाहर निकले तो शायद लोग उंगली उठाएं और मज़ाक़ उड़ाएं लिहाज़ा अ़वाम के सामने येह अन्दाज़ इख़्तियार न किया जाए। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत** رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में एक मख़्सूस मुस्तह़ब काम के करने के बारे में इस्तिफ़्ता पेश हुवा, (या'नी फ़तवा मांगा गया) तो चूंकि उस अम्रे मुस्तह़ब पर हिन्द के अन्दर अ़मल करने में फ़ितने का एह़तिमाल (या'नी इम्कान) था लिहाज़ा आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : ''जहां इस का रवाज है मुस्तह़ब है, (मगर) इन बलाद (या'नी हिन्द के शहरों) में कि इस का (नाम व) निशान नहीं, अगर वाक़ेअ़ हो (या'नी कोई करे) तो जुह्हाल (या'नी जाहिल लोग) हंसें और मस्अलए शरइय्या पर हंसना

www.dawateislami.net

अपना दीन बरबाद करना है, तो यहां इस पर इक़्दाम (या'नी अ़मल) की ह़ाजत नहीं। ख़ुद एक मुस्तह़ब बात करनी और मुसल्मानों को ऐसी सख़्त बला (या'नी शरीअ़त के मसाइल पर हंसने की आफ़त) में डालना पसन्दीदा नहीं।" (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 603)

कान पर क़लम रखना

लिखने वाले का कान पर **क़लम** रखना अच्छा है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ैद इब्ने साबित رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं **नबिय्ये करीम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और आप के सामने कातिब (या'नी एक लिखने वाला आदमी) था मैं ने **हुज़ूरे अकरम** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते सुना कि **क़लम** अपने कान पर रखो कि येह अन्जाम को ज़ियादा याद कराने वाला है। **(ترمذی ج ٤ ص ٣٢٧ حدیث ٢٧٢٣)**

मुफ़स्सिरे शहीर **ह़कीमुल उम्मत** ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : अगर कातिब (या'नी लिखने वाला) **क़लम** को कान से लगाए रखे तो उसे वोह मक़्सद याद रहेगा जो उसे लिखना है। बेहतर येह है कि **क़लम** दाह्ने (या'नी सीधे) कान पर रखे। **अल्लाह तआ़ला** ने हर चीज़ में कोई (न कोई) तासीर रखी है, क़लम कान में लगाने की येह तासीर है कि इसे (या'नी कान पर क़लम रखने वाले को) मज़्मून याद रहता है। (मिरआतुल मनाजीह़, स. 6, स. 334) इस से मुराद नफ़्सियाती तासीर व असर भी हो सकता है।

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़्फ़िरत है। (ابن عساکر)

मिस्वाक रखने के लिये मख़्सूस जेब बनवाइये

हो सके तो अपने कुरते में सीने पर दाएं बाएं दो जेब बनवाइये और दिल की जानिब (या'नी उलटे हाथ की त़रफ़ वाली) जेब के बराबर में **मिस्वाक** रखने के लिये एक छोटी सी जेब बनवा लें। यूं प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की प्यारी प्यारी सुन्नत **मिस्वाक शरीफ़** गोया सीने और दिल से लगी रहेगी।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

﴾6﴿ सोने के सिक्के के बदले मिस्वाक ख़रीदी (ह़िकायत)

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी** قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی नक़्ल करते हैं : एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू बक्र शिब्ली** बग़दादी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْهَادِی को वुज़ू के वक़्त **मिस्वाक** की ज़रूरत हुई, तलाश की मगर न मिली, लिहाज़ा एक दीनार (या'नी एक सोने की अशरफ़ी) में **मिस्वाक** ख़रीद कर इस्ति'माल फ़रमाई। बा'ज़ लोगों ने कहा : येह तो आप ने बहुत ज़ियादा ख़र्च कर डाला ! कहीं इतनी महंगी भी **मिस्वाक** ली जाती है ! फ़रमाया : बेशक येह दुन्या और इस की तमाम चीज़ें **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ के नज़्दीक मच्छर के पर बराबर भी हैसिय्यत नहीं रखतीं, अगर बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझ से येह पूछ लिया कि "तू ने मेरे प्यारे ह़बीब (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की सुन्नत (मिस्वाक) क्यूं तर्क की ? जो मालो दौलत मैं ने तुझे दिया था उस की ह़क़ीक़त तो (मेरे नज़्दीक) मच्छर के पर बराबर भी नहीं थी, तो

आख़िर ऐसी ह़क़ीर दौलत इस अ़ज़ीम सुन्नत (मिस्वाक) को ह़ासिल करने पर क्यूं ख़र्च नहीं की ?" तो क्या जवाब दूंगा ! (مُلَخَّص اَز لواقح الانوار ص ٣٨) **अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त** عَزَّوَجَلَّ **की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالیٰ عليه واٰله وسلَّم

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! देखा आप ने ! हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللهُ الْمُبِين सुन्नतों से किस क़दर प्यार करते थे ! ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र शिब्ली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَلِى ने एक दीनार (या'नी सोने की अशरफ़ी) मक्के मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नत **मिस्वाक शरीफ़** पर कुरबान कर दिया।

﴾7﴿ आंखों से आंसू छलक पड़े ! (ह़िकायत)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर सुन्नत मख़्ज़ने ह़िक्मत है, **मिस्वाक** ही को ले लीजिये ! इस सुन्नत की ब-र-कतों के भी क्या कहने ! एक ब्योपारी का बयान है : "सूइज़र लेन्ड" में एक नौ मुस्लिम से मेरी मुलाक़ात हुई, उस को मैं ने तोह़फ़तन **मिस्वाक** पेश की, उस ने खुश हो कर उसे लिया और चूम कर आंखों से लगाया और एक दम उस की **आंखों से आंसू छलक पड़े !** उस ने जेब से एक रुमाल निकाला उस की तह खोली तो उस में से तक़रीबन दो इन्च का छोटा सा **मिस्वाक** का टुकड़ा बरआमद हुवा। कहने लगा : मेरी इस्लाम आ-वरी के वक़्त मुसल्मानों ने मुझे येह तोह़फ़ा दिया था। मैं बहुत संभाल संभाल कर इस

www.dawateislami.net

को इस्ति'माल कर रहा था, येह ख़त्म होने को था और मुझे तश्वीश थी अब **मिस्वाक** कहां से मिलेगी ! बस **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने करम फ़रमा दिया और आप ने मुझे **मिस्वाक** इनायत फ़रमा दी । फिर उस ने बताया कि एक अ़र्से से मैं दांतों और मसूढ़ों की तक्लीफ़ से दो चार था, हमारे यहां के दांतों के डॉक्टर (Dentist) से इन का इलाज बन नहीं पड़ रहा था । मैं ने इस **मिस्वाक** का इस्ति'माल शुरूअ़ किया اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ थोड़े ही दिनों के अन्दर मैं ठीक हो गया । मैं जब डॉक्टर के पास गया तो वोह हैरान रह गया और पूछने लगा : मेरी दवा से इतनी जल्दी तुम्हारा मरज़ दूर नहीं हो सकता, सोचो कोई और वज्ह होगी । मैं ने जब ज़ेहन पर ज़ोर दिया तो ख़याल आया कि मैं मुसल्मान हो चुका हूं और येह सारी ब-र-कत **मिस्वाक** ही की है । जब मैं ने डॉक्टर को **मिस्वाक** दिखाई तो वोह हैरत से देखता ही रह गया ।

﴾8﴿ मिस्वाक से गले के दर्द और गरदन की सूजन का तिब्बी इलाज

एक शख़्स के गले और गरदन में दर्द था और गरदन में सूजन भी थी गले के मरज़ की वज्ह से उस की आवाज़ भी ख़राब थी । और गरदन के दर्द और सूजन के बाइस उस का सर भी चकराने लगा था जिस से उस का हाफ़िज़ा कमज़ोर हो चुका था । येह शख़्स डॉक्टरों के ज़ेरे इलाज रहा मगर सब बेसूद साबित हुवा । किसी ने उसे **मिस्वाक** करने का मश्वरा दिया तो वोह बा क़ाइदा **मिस्वाक** करने लगा । और इसी के

www.dawateislami.net

साथ साथ **मिस्वाक** के दो टुकड़े कर के पानी में उबालता और उस पानी से ग़रारे करता। इलावा अज़ीं जहां सूजन थी वहां कुछ दवा भी लगाता रहा। येह इलाज बड़ा मुफ़ीद साबित हुवा। इस की जब तहक़ीक़ की गई तो उस के थाईराईड ग्लेंड मु-तअस्सिर थे जिस का असर सारे जिस्म पर हुवा था। इस **मिस्वाक** वाले इलाज से उस की येह बीमारी दूर हो गई और वोह रू ब सिह़्ह़त (या'नी तन्दुरुस्त) हो गया।

﴾9﴿ मिस्वाक और गले के ग़ुदूद

एक साहिब गले के ग़ुदूद बढ़ने के सबब परेशान थे। उन्हें शहतूत का शरबत पीने को दिया गया और ताज़ा **मिस्वाक** बा क़ाइदा इस्ति'माल कराई गई तो मरीज़ ने फ़ौरी इफ़ाक़ा (या'नी फ़ाएदा) मह़सूस किया।

﴾10﴿ मिस्वाक की 25 ब-र-कतें

ह़ज़रते अ़ल्लामा सय्यिद अह़मद त़ह़त़ावी ह़-नफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی **''ह़ाशि-यतुत्तह़त़ावी''** में **मिस्वाक** के फ़वाइद व फ़ज़ाइल यूं नक़्ल फ़रमाते हैं **:** ۞ **मिस्वाक** शरीफ़ को लाज़िम कर लो, इस से ग़फ़्लत न करो। इसे हमेशा करते रहो क्यूं कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ख़ुशनूदी है ۞ हमेशा **मिस्वाक** करते रहने से रोज़ी में आसानी और ब-र-कत रहती है ۞ दर्दे सर दूर होता है ۞ बल्ग़म को दूर करती है ۞ नज़र को तेज़ करती है ۞ मे'दे को दुरुस्त रखती है ۞ जिस्म को

तुवानाई बख़्शती है ۞ ह़ाफ़िज़ा (क़ुव्वते याद दाश्त) को तेज़ करती है और अ़क़्ल को बढ़ाती है ۞ दिल को पाक करती है ۞ नेकियों में इज़ाफ़ा हो जाता है ۞ फ़िरिश्ते ख़ुश होते हैं ۞ **मिस्वाक** शैत़ान को नाराज़ कर देती है ۞ खाना ह़ज़्म करती है ۞ बच्चों की पैदाइश में इज़ाफ़ा होता है ۞ बुढ़ापा देर में आता है ۞ पीठ को मज़बूत़ करती है ۞ बदन को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त के लिये क़ुव्वत देती है ۞ नज़्अ़ में आसानी और कलिमए शहादत याद दिलाती है ۞ क़ियामत में नामए आ'माल सीधे हाथ में दिलाती है ۞ पुल सिरात़ से बिजली की त़रह़ तेज़ी से गुज़ार देगी ۞ ह़ाजात पूरी होने में उस की इमदाद की जाती है ۞ क़ब्र में आराम व सुकून पाता है ۞ उस के लिये जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं ۞ दुन्या से पाक साफ़ हो कर रुख़्सत होता है ۞ सब से बढ़ कर फ़ाएदा येह है कि इस में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा है । **(حاشیۃ الطّحطاوی علی مراقی الفلاح ص ٦٨، ٦٩ ملخّصاً)**

म-दनी क़ाफ़िले

आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर इस्लामी माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से **मिस्वाक** की सुन्नत पर अ़मल का भी ज़ेह्न बनेगा ।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** शबे जुमुआ़ और रोजे़ जुमुआ़ मुझ पर दुरूद की कसरत कर लिया करो जो ऐसा करेगा क़ियामत के दिन मैं उस का शफ़ीअ़ व गवाह बनूंगा । (شعب الایمان)

या रब्बे मुस्त़फ़ा عَزَّوَجَلَّ **!** हमें अपने प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदके़ **मिस्वाक** की सुन्नत पर पाबन्दी से अ़मल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे ह़िसाब
जन्नतुल फ़िरदौस में
आक़ा के पड़ोस का त़ालिब

रबीउ़ल अव्वल 1438 सि.हि.
दिसम्बर 2016 ई.

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
بخاری	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ابن بشکوال	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حیاۃ الحیوان	دارالکتب العلمیۃ بیروت
مسلم	دارابن حزم بیروت	شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	لواقح الانوار	داراحیاء التراث العربی بیروت
ابوداؤد	داراحیاء التراث العربی بیروت	جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ردالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	جامع صغیر	دارالکتب العلمیۃ بیروت	حاشیۃ الطحطاوی	باب المدینہ کراچی
مسند احمد بن حنبل	دارالفکر بیروت	الکامل فی ضعفاء الرجال	دارالکتب العلمیۃ بیروت	مراۃ المناجیح	ضیاء القرآن پبلی کیشنز مرکز الاولیا لاہور
مصنف ابن ابی شیبہ	دارالفکر بیروت	شرح المہذب	دارالفکر بیروت	انوار جمال مصطفٰے	شبیر برادرز اُردو بازار مرکز الاولیا لاہور
معجم کبیر	داراحیاء التراث العربی بیروت	عمدۃ القاری	دارالفکر بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
البحر الزخار	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	قوت القلوب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	ملفوظات اعلٰی حضرت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
الترغیب والترہیب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	احیاء العلوم	دارصادر بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی